दशकुमारचरितम्

गद्य कवियों में दण्डी का स्थान।

संस्कृत के काव्यशास्त्र के इतिहास में दण्डी का व्यक्तित्व स्पष्ट है। उनके सम्बन्ध में कही गई यह उक्ति 'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः" उनके विश्रुत एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

सुबन्धु ने जिस अलंकृत शैली का प्रवर्तन किया था उसका चरम परिपाक बाणभट्ट की रचना में हुआ। दण्डी की रचना में सुबन्धु की अलंकृत और कृत्रिम शैली के अतिरिक्त पंचतन्त्र की स्वाभाविक शैली का समन्वय परिलक्षित होता है। उन्होंने जीवन के कटु ~~और यथार्थ~~ अनुभव को यथार्थवादी शैली का रूप प्रदान किया है। महाकवि दण्डी संस्कृत के सुप्रसिद्ध गद्यकार हैं, जिन्होंने परम्परानुसार तीन प्रबन्धों का प्रणयन किया है। [आचार्य दण्डी के सम्बन्ध में 'शार्ङ्गधरपद्धति' में राजशेखर के नाम से एक श्लोक उद्धृत है, जिसमें कहा गया है कि —

'त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः ॥'

अर्थात् तीन अग्नियाँ, तीन देवता, तीन वेद और तीन गुणों की भाँति आचार्य दण्डी के तीन प्रबन्ध तीनों लोकों में विश्रुत हैं। इनमें एक 'दशकुमारचरित' है और दूसरा काव्यादर्श और तीसरे के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। पिशेल ने बताया है कि तीसरी कृति 'मृच्छकटिक' ही है जो भ्रमवश शूद्रक की रचना के नाम से प्रसिद्ध है। इस मत की पुष्टि उन्होंने 'मृच्छकटिक' एवं दशकुमारचरित' में वर्णित सामाजिक सम्बन्धों के सादृश्य के कारण ही है, पर इतने भर से दण्डी 'मृच्छकटिक' के रचयिता सिद्ध नहीं होते। कुछ विद्वानों ने 'छन्दोविचिति' को दण्डी की तृतीय कृति माना है, क्योंकि इसका संकेत 'काव्यादर्श' में ही प्राप्त होता है। पर डा० कीथ के इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार 'छन्दोविचिति' तथा 'काल-परिच्छेद' दण्डी की स्वतन्त्र रचना न होकर 'काव्यादर्श' ~~में ही प्राप्त होता~~ है। के दो परिच्छेद थे। दण्डी की तीसरी रचना 'अवन्तिसुन्दरी कथा' को कहा जाता है, जो अपूर्ण रूप में प्रकाशित है।]

[सुबन्धु संस्कृत के प्रथम गद्यकार माने जाते हैं। यद्यपि उनके बारे में कोई प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता, फिर भी अन्य कवियों और लेखकों के उल्लेखों के आधार पर उन्हें

बाणभट्ट और दण्डी के पूर्व का कहा जा सकता है। सुबन्धु के काव्य में सर्वत्र कलापक्ष की ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। कलाप्रियता के कारण ही सुबन्धु की गद्यशैली अतिशयोक्ति, समास तथा अनुप्रास बहुला गौडीरीति प्रधान हो गयी है। "वासवदत्ता" विरोधाभास और श्लेष के ऐसे गहन कान्तार (जंगल) के रूप में रचित है जिसमें विहार करने वाले कितने ही विद्वत्गजों के सुदृढ़ बुद्धि-रूपी पैर उलझकर रह जाते हैं।

सुबन्धु की कृत्रिम गद्यशैली का विकसित, प्रौढ़ एवं मसृण रूप बाण की शैली की निजी विशेषता है, जिसमें महाकवि कालिदास का भाव तारल्य एवं माघ तथा भवभूति की सानुप्रासिक समासान्त पदावली अनुस्यूत होकर एकरूप हो गयी है। महाकवि बाणभट्ट संस्कृत के श्रेष्ठ गद्यकार एवं संस्कृत गद्य के सार्वभौम सम्राट् हैं। उन्होंने कथा-साहित्य में युग-प्रवर्तन किया है। उनकी वर्णन शैली अत्यन्त निपुण है और वे कृत्रिम आलंकारिक शैली के पक्षधर हैं। उनके अनुसार आदर्श गद्यशैली में "गूढ़न एवं चमत्कारपूर्ण अर्थ, सुरुचिपूर्ण स्वभावोक्ति, सरलश्लेष, स्पष्ट रूप से प्रतीत होनेवाला रस तथा अक्षरों की दृढ़बद्धता" आवश्यक है।

डा० सूर्यकान्त ने बाण और दण्डी की तुलना करते हुए ठीक ही कहा है — 'जीवन के सात्विक पक्ष पर जो भी कहा जा सकता था, बाण ने आधी कादम्बरी में कह दिया था — बच गया था जीवन का वह सलोना पक्ष, जिसकी परिचर्चा वात्स्यायन ने अपने कामसूत्र में की थी — इस 'रजः कलुषित तामस जगत्' का जितना व्यापक, जितना गहरा और मार्मिक निदर्शन दण्डी ने अपने दशकुमारचरित में किया है, वैसा भारतीय साहित्य में किसी ने नहीं किया है।"

दण्डी का दशकुमारचरित ललित और मधुर होने के साथ-साथ सुबन्धु और बाण के गद्य से सरल भी है। इसका कथानक जहाँ विचित्र है, वहाँ उसके अनुरूप वर्णन शैली भी प्रवाहमय और सरस है। इसमें कहीं विलास का निकास हृदय को उन्मत्त करता है तो कहीं सौन्दर्य का सौरभ अन्तरात्मा को तृप्त करता है। कहीं हास की कोमल लहरी मानसतल को तरंगित करती है तो कहीं परिस्थिति की जटिलता, कार्य की गुरुता जन मानस को गम्भीर बना देती है। वस्तुतः विशद चरित्र चित्रण, नैसर्गिक शैली, बुद्धि का अनुपम विलास, शिष्ट हास-परिहास, विषयान्तरों की न्यूनता, रसानुकूल शब्द-योजना, यथार्थ और आदर्श का

मणिकाञ्चन संयोग आदि विशेषताएँ दण्डी के दशकुमारचरित को गद्य साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं।

दण्डी की गद्यशैली अत्यन्त सरल, सुबोध एवं भाषा की प्रवाहमयता से युक्त है। इनके गद्य की भाषा सामान्य जन-जीवन के अधिक निकट है। इनकी भाषा अलंकारों के आडम्बर से रहित प्रवाहपूर्ण, मंजी हुई एवं मुहावरेदार है। इनका गद्य न तो सुबन्धु के समान श्लेष-मंडित है और न ही बाण के समान गाढ़-बन्धता से युक्त है। छोटे-छोटे समासों तथा सरल पद-विन्यास से युक्त दण्डी के वाक्य अत्यन्त पुष्ट और सहृदयों का हृदयाकर्षण करने वाले हैं। परम्परा के अन्य गद्यकारों से परे दण्डी अपने नवीन मार्ग के उद्भावक हैं। इनका यह मार्ग गद्य-शैली का अत्यन्त सुकुमार मार्ग है — अर्थ की स्पष्टता, सुन्दर समासयोजना, ललित पदों की आयोजना तथा भाषा का दैनन्दिन प्रयोगों के निकट होना आदि इनके इस नवीन मार्ग की विशेषताएँ हैं। इनके गद्य में पदों की आयोजना इतनी ललित एवं मनोरम है कि पण्डित वर्ग ने 'दण्डिनः पदलालित्यम्' कहकर इसकी सराहना की है। संक्षेप में संस्कृत-शास्त्रियों में रीति (शैली) को ही किसी भी रचना का प्रमुख तत्त्व मानने वाले महाकवि दण्डी अपनी इस गद्य कृति में उस 'विशिष्ट पद ~~रचना~~ रचना' का सुष्ठु निदर्शन भी करते हैं। कीथ महोदय मुक्त कण्ठ से दण्डी की गद्य शैली और भाषा की सराहना करते हुए कहते हैं — 'दण्डी को निस्संदेह अपनी भाषा के प्रयोग में आचार्यत्व प्राप्त है। वे आख्यान का सरल एवं सुबोध वर्णन करने में सर्वथा समर्थ हैं और अपने पात्रों द्वारा कहलाए जाने वाले भाषणों में वे भाषा की जटिलता एवं विस्तार के दोष को सावधानी के साथ दूर रखते हैं। परन्तु वर्णनों में वे अपनी प्रतिभा तथा भाषा पर अपना अधिकार प्रदर्शित करने के लिए उद्यत रहते हैं और इनमें वे मुख्यतया वैदर्भी रीति के अनुयायी हैं तथा एक पारस्परिक मूल्यांकन के आधार पर वे पद लालित्य में सबसे आगे बढ़ जाते हैं। उनके ग्रन्थ में सौन्दर्य, ध्वनि का सामंजस्य और रस की प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है। गद्य में दीर्घ समासों की रचना के अधिकार का वे उचित समय के साथ खुला उपयोग करते हैं, परन्तु मुख्यतः उनके समास समझने में कठिन नहीं हैं'। सारांश रूप में सुन्दर कौतुक पूर्ण कथानकों के सृजन एवं सृजन तथा सुबोध संस्कृत गद्य के लेखन की दृष्टि से दण्डी संस्कृत साहित्य के अन्य गद्यकारों के बीच अद्वितीय हैं।

दण्डी भले ही एकमात्र कवि न माने जाएं, किन्तु

उच्चकोटि के गद्यकार तो माने ही जाते हैं। संस्कृत गद्य के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले होने के कारण दण्डी का महत्व और भी बढ़ गया है। जहाँ दण्डी में विचित्रता, वीरता एवं शृंगारिकता का स्निग्ध एवं मधुर चित्रण है, वहाँ सुबन्धु चित्र काव्य लिखने के फेर में पड़कर रम्य भावों का अंकन तो नहीं कर पाए, अपनी स्वाभाविकता भी खो बैठे। उनके काव्य में न तो दण्डी का सा हास, ओज और वैचित्र्य है और न ही बाण सरीखी कल्पना शक्ति तथा वर्णन प्रतिभा ही। उनकी समास बहुल भाषा में सौन्दर्य, प्रसाद और माधुर्य कम है, आडम्बर, कृत्रिमता तथा असंगति अधिक है।

दण्डी ने अपने दशकुमारचरित में तत्कालीन समाज के उच्च एवं निम्न वर्ग का बड़ी निपुणता के साथ अंकन किया है। दण्डी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अनेक अवान्तर कथाओं के होने पर भी मुख्य कथा में अवरोधक नहीं हुई है। वस्तुतः सुन्दर, सरल और सुबोध गद्य के निर्माता होने के नाते दण्डी साहित्य में अमर होकर रह गए हैं। दण्डी के सम्बन्ध में कवियत्री गंगा देवी का यह कथन उपयुक्त ही है —

आचार्य दण्डिनो वाचामाचान्तामृत संपदाम्।
विकासो वैदुषः पत्न्याः विलासमणि दर्पणम्॥

दशकुमारचरित का संस्कृत के गद्य काव्यों में अत्यन्त महत्व पूर्ण स्थान है। उसमें राजनीति, कामशास्त्र, धर्म और दर्शन के तत्वों का सरल सन्निवेश है। शृंगार और वीर का उचित समन्वय है। साहस और 'सरप्राइज' शास्त्र और लोकाचार आदि का गुम्फन है। जीवन के यथार्थ चित्रों को दण्डी ने अनुभूति के निकष पर कसकर प्रस्तुत किया है।

संस्कृत गद्य के जन्मदाता होने के कारण दण्डी का स्थान एवं महत्व संस्कृत गद्य साहित्य के इतिहास में श्लाघनीय है। महाकवि दण्डी ने संस्कृत में गद्य का सृजन करके साहित्य के एक महत्वपूर्ण अंग के अधूरेपन को दूर किया, साथ ही पाठकों को गद्य में भी पद्य का सा काव्यानन्द प्रदान किया। दण्डी ने जिस परंपरा को जन्म दिया बाण ने उसे प्रौढ़ता प्रदान कर संस्कृत गद्य का चूड़ान्त निदर्शन उपस्थित कर दिया। परवर्ती गद्यकारों ने इन्हीं दो का अनुकरण किसी न किसी रूप में किया है। परन्तु उनमें शैली की दृष्टि से न तो कोई नवीन आविष्कार मिलता है और न ही मौलिकता। संस्कृत गद्यकाव्य की यह परंपरा आजतक विकसित होती चली आ रही है।